पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

समाज
विकास
शिक्षा
पर्यावरण
युवा
मूल्य
राजनीति
महिला
संस्कृति
समाधान

समाज
साहित्य
संस्कृति
विकास
नई पीढ़ी
बेहतर कल

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-
यारु खान रायपाल

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन, वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका – **यारू खान रायपाल**

आज की सबसे बड़ी समस्या -

युवा और मोबाइल की लत

आज की सबसे बड़ी समस्या - युवा और मोबाइल की लत

आज अगर हम अपने चारों ओर देखें तो सबसे बड़ा संकट हमारे युवाओं पर मंडरा रहा है। जिस तकनीक को हमारे जीवन को आसान बनाना था, वही तकनीक आज हमारे युवाओं को अपने जाल में फंसा रही है। आज के युवा के हाथ में पुस्तक नहीं, मोबाइल है और यही चिंता का सबसे बड़ा कारण है।

शिक्षा का गिरता स्तर -

पहले विद्यार्थी पुस्तकालय में बैठकर घंटों अध्ययन करता था, चिंतन करता था। आज कक्षा में विद्यार्थी का शरीर तो उपस्थित है, पर मन कहीं और है। दस मिनट पढ़ाने के बाद ही सबकी नजरें अपनी जेब की ओर चली जाती हैं।

शिक्षा का सबसे बड़ा नुकसान यह हुआ है कि मेहनत करने की आदत खत्म हो गई है। गृहकार्य, परियोजना कार्य सब कुछ इंटरनेट से नकल किया जा रहा है। मौलिक लेखन लगभग समाप्त हो गया है। जब मैं छात्रों से कहता हूँ कि प्रेमचंद पर दो पृष्ठ अपने शब्दों में लिखो, तो वे इंटरनेट से ऐसी भाषा उतार लाते हैं जिसे वे खुद भी नहीं समझते। आज बारहवीं कक्षा का विद्यार्थी भी बिना त्रुटि के शुद्ध हिंदी नहीं लिख पाता। यह शिक्षा के पतन की शुरुआत है।

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव -

आज का युवा औसतन आठ से नौ घंटे मोबाइल स्क्रीन पर बिता रहा है। रात-रात भर वीडियो और रील देखने से नींद पूरी नहीं होती। सुबह आँखें लाल, सिर में भारीपन और स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन पहले ही ऑनलाइन गेम की लत को मानसिक बीमारी घोषित कर चुका है।

सामाजिक माध्यमों ने एक दिखावटी दुनिया बना दी है। वहाँ हर व्यक्ति सुखी और सफल दिखाई देता है। उसे देखकर हमारे गाँव का युवा अपने वास्तविक जीवन को छोटा समझने लगता है। यहीं से हीन भावना, निराशा और अकेलेपन की शुरुआत होती है। छोटी-छोटी बातों पर क्रोध, परिवारजनों से झगड़ा और हमेशा तनाव में रहना इसी डिजिटल लत के परिणाम हैं।

सामाजिक मेलजोल में कमी -

पहले गाँव में शाम के समय चौपाल लगती थी। लोग एक साथ बैठते थे, सुख-दुख बाँटते थे। आज हर घर में सन्नाटा है। एक ही परिवार के चार सदस्य चार अलग-अलग कमरों में अपने मोबाइल में व्यस्त हैं। माँ भोजन परोस रही है और बेटा कानों में यंत्र लगाए हुए है।

हमने सामाजिक माध्यमों पर हजारों मित्र बना लिए, पर पड़ोस में किसी के दुख में शामिल होने वाला कोई नहीं है। संदेश समूहों में पाँच सौ लोग जुड़े हैं, पर मुसीबत के समय एक भी काम नहीं आता। हमने संपर्क तो बढ़ा लिया, पर संबंध खो दिए हैं। बिना जाँच-पड़ताल के गलत समाचारों को आगे भेजने से समाज में आपसी भाईचारा भी टूट रहा है।

समाधान का मार्ग -

इस समस्या का समाधान डाँट-फटकार से नहीं, बल्कि प्रेम और खेल के माध्यम से होगा।

पहली जिम्मेदारी अभिभावकों की है। घर में एक नियम बनाना होगा कि भोजन के समय और सोने से एक घंटे पहले कोई भी मोबाइल का उपयोग नहीं करेगा।

दूसरी जिम्मेदारी विद्यालयों की है। पुस्तकालय को फिर से जीवित करना होगा और बच्चों को खेल के मैदान की ओर लाना होगा।

अंत में युवा साथियों से यही कहना है कि वीडियो कुछ सेकंड का है और जीवन सौ वर्षों का। कुछ सेकंड के आकर्षण में अपना पूरा जीवन नष्ट मत करो। मोबाइल को अपनी जेब में रखो, अपने मन पर हावी मत होने दो।

------- तकनीक का उपयोग करो, उसके गुलाम मत बनो। -------

- यारु खान रायपाल

लेखक परिचय

नाम – यारु खान रायपाल

निवास – ग्राम पंचायत पदरोड़ा (जैसलमेर)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**यारु खान रायपाल**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...